"मटका फिल्टर तेरा पानी अमृत"

आज भ्रमण के दौरान गाँव में मेडिकल के दुकान पर बैठे कुछ लोगों के मुँह गीत गाने की आवाज सुनाई पड़ी। धून था गंगा तेरा पानी निर्मल किन्तु बोल कुछ और ही था। मैं कन्फ्यूज कर गया कि क्या गाता है ? धीरे–धीरे मेडिकल दुकान की ओर बढ़ा तो देखा कि खगड़िया रजिस्ट्री कार्यालय के एक मुंशीजी बड़े ही सुरीली आवाज में गा कर मेडिकल बैठे लोगों को सुना रहे थे, बोल था–

"मटका फिल्टर तेरा पानी अमृत
जो भी पीए उसकी काया हो निर्मल
मटका फिल्टर तेरा पानी अमृत

यों मटका फिल्टर कोई नई बात नहीं है। लोग किताबों में भी मटका–फिल्टर की बात पढ़े हैं। तीन मटका होता है उपर दो में एक छेद होता है। बीच वाले में कोयला बालू एवं ईट के टुकड़े देते हैं जिससे शुद्ध पानी तीसरे में जमा होता है। बहुत से लोग इस बात को जानते हैं परन्तु किसी ने भी इसके व्यवहार या इसे बनाकर उपयोग करने की बात नहीं सोची। सिर्फ किताबी बात समझकर किताब में ही रहने दिया।_

श्री बबन झा, (िाक्षक) मो0– राजेन्द्र नगर, खगड़िया

बात राजेन्द्र नगर मोहल्ले के स्थित नारायण निकेतन की है जहाँ एक छोटा सा रूम लेकर एम0 पी0 ए0 कार्यकर्त्ता ब्रज भूषण जी रहते हैं। झा के मुताबिक यहाँ जो हैंण्ड पम्प है उसमें आयरन की मात्रा 3 से भी अधिक है क्योंकि वहाँ कई बार अमरूद के पत्ते से जल जांच किया गया। हालांकि वहाँ के लोग इस जांच से बहुत प्रभावित नहीं थे क्योंकि उस मोहल्ले में सरकारी नौकरी करने वाले ही जमीन खदीर कर अपना मकान बनाऐ हैं। काफी एडवांस मुहल्ला है। हर घर में वाटर फिल्टर है। आखिर लोग क्यों इसके प्रति रूची लें।

नारायण निकेतन में दो किरायेदार रहते हैं। जिसमें एक झा जी दूसरा श्री बबन झा शिक्षक। हालांकि बबन जी के पास भी वाटर फिल्टर है। किन्तु झा के पास कुछ भी नहीं था। उन्हें तो आयरन युक्त पानी ही पीना पड़ रहा था। आखिर ये अपना रास्ता ढूंढ़ ही लिया पानी पे काम करने वाले झा जी समता कार्यालय से मटका फिल्टर खरीद लिया।

दिनांक 16 अगस्त को नारायण निकेतन स्थित अपने रूम में ही मटका–फिल्टर लगाकर पानी पीने का काम शुरू किया। धीरे–धीरे मुहल्ला में मटका–फिल्टर की चर्चा होने लगी। लोग देखने के ख्याल से आने लगे

ओर एक ग्लास पानी पी कर यह जांच किए की हमारे पास जो वाटर फिल्टर है वैसा पानी है या नहीं। पानी पीने के बाद निम्नलिखित प्रतिकिया आयी। श्री बबन झा (शिक्षक) कहते हें कि कहीं न कहीं बाजरू फिलटर से ज्यादा अच्छा स्वाद है मटका फिल्टर के पानी का। इतना ही नहीं बल्कि दो चार बोतल में दो दिन तक पानी रखकर यह भी देखा गया कि पानी का रंग पीला भी होता है। दो दिन बाद सुबह में मुहल्ले के लोग कहने लगे **मटका फिल्टर तेरा पानी अमृत**।

परिणाम यह हुआ कि श्री बबन झा सारे परिवार के साथ अपना बाजारू फिल्टर को छोड़ मेघ पाईन अभियान के द्वारा निर्मित मटका फिल्टर खरीद पानी पी रहे हैं।